International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 11 Issue – 1 January-June 2023
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन : एक उद्योग के रूप में

सोनिका गुर्जर

शोध छात्रा, भुगोल विभाग

सिंघानियां विश्वविद्यालय, पंचेरी बड़ी, झुन्झुनूं

डॉ. मुकेश कुमार शर्मा

सह आचार्य , भुगोल विभाग

सिंघानियां विश्वविद्यालय, पंचेरी बड़ी, झुन्झुनूं

परिचय

मानव एक सामाजिक एवं जिज्ञासु प्राणी है। प्राकृतिक सौंदर्य की पिपासा उसकी कमजोरी है। यही कमजोरी देश–विदेश के विभिन्न स्वरूपों के ज्ञान को जानने की उत्सुकता बनाये रखती है और मानव देश–विदेश का भ्रमण करता है।

प्राचीन काल के भावी अन्वेषक, दार्शनिक कवि, साधु सन्यासी इत्यादि ने प्रकृति के सौंदर्य के विषय में अपने विचारों को बताया। साथ ही वहां प्राकृतिक सौंन्दर्य ने मानव के मस्तिष्क पर एक गहरी छाप अंकित की है।

आज के इस प्रगतिशील युग में मनुष्य अपने कार्यों में इतना संलग्न है कि वह अपने दैनिक कार्यों से ऊब गया है। वह अपने इन कार्यों से कुछ क्षणों के लिए छुटकारा पाना चाहता है। प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण से मुक्ति पाने की इच्छा के कारण ही आज के इस युग में पर्यटकों के रूप में देश–देशांतर घूमता रहता है।

पर्यटन व्यवसाय में आर्थिक विकास के लिए साधन जुटाने की अपूर्व संभावनाएं है। विश्व में कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पादनों और आटोमोटिव साज सामाज के व्यवसाय के पश्चात् पर्यटन ही तीसरा सबसे बड़ा आय का जरिया है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि विश्व के विकसित देश भी पर्यटन विकास को उच्चतम प्राथमिकता दे रहे हैं। पर्यटन आज ब्रिटेन का सबसे प्रगतिशील उद्योग है।

भारत में भी पिछले कुछ समय में पर्यटन को काफी बढ़ावा मिला है, फिर भी दुनिया भर में इस व्यवसाय की दशा को देखते हुए, हमें अभी लंबा सफर तय करना है। फिर भी आज विदेशी मुद्रा अर्जित करने में यह व्यवसाय अद्वितीय है। पर्यटन ही संभवतः एकमात्र ऐसा व्यवसाय है जिसमें अर्जित विदेशी मुद्रा का केवल 7 प्रतिशत अंश का स्वयं के लिए उपयोग करता है शेष 93 प्रतिशत विदेशी मुद्रा हमारे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के घाटे को कम करने के काम आती है। यह उल्लेखनीय है कि पर्यटन एक श्रम प्रधान उद्योग है और हमारी कई सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के निवारण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। देश की एकता को मजबूत करने में भी इस व्यवसाय की भूमिका बड़ी अहम हो सकती है।

इतना सब होने के बावजूद इस क्षेत्र में हमारी प्रगति धीमी है। एक महाद्वीप के बराबर आकार वाले हमारे देश में दुनिया की समस्त वस्तुएं और साधन उपलब्ध होने के बावजूद केवल 16 लाख पर्यटकों का भारत आना नहीं के बराबर माना जाना चाहिए।

हमें यह मानना होगा कि पर्यटन एक महत्वपूर्ण उद्योग है। इस उद्योग के विकास के लिए हमें आवश्यक सुविधाएं जुटानी होगी। इसकी विदेशी मुद्रा अर्जित करने की क्षमता को देखते हुए इस उद्योग को भी निर्यात उद्योग के समान माना जाकर उनके अनुरूप ही सुविधाएं दी जानी चाहिए।

राजस्थान का देश के पर्यटन नक्शे में एक विशिष्ट स्थान है। महाराष्ट्र, दिल्ली और तमिलनाडू के पश्चात् राजस्थान की देश के पर्यटन व्यवसाय में सर्वोच्च स्थिति है। उल्लेखनीय है। उपयुक्त तीनों राज्यों में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे भी हैं। विदेशी पर्यटक भारत में बिताए कुल दिनों में से अधिकतम दिन राजस्थान में ही बिताते हैं। राजस्थान की परंपरा और संस्कृति के प्रति विदेशी पर्यटकों में विशेष आकर्षण है। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर और शेखावाटी प्रदेश में पर्यटकों का आगमन बढ़ रहा है, इसका प्रमाण है। 'पैलेस ऑन व्हील्स' अधिकाधिक लोकप्रिय होती जा रही है किन्तु अभी भी हमारे प्रयासों में और तेजी लाने की आवश्यकता है, उदाहरणार्थ हवेलियों की ओर पर्याप्त ध्यान देकर उनके लिए आकर्षण बढ़ाया जा सकता है। यहां 18वीं व 19वीं सदी के लगभग 60 हवेलियां ऐसी हैं, जिनकी नक्काशियां अनुपम है। इन हवेलियों की ओर अभी तक समुचित ध्यान नहीं दिया गया है और इनकी दशा शनैः–शनैः बदतर हो रही है। इन हवेलियों को इनकी पूर्व भव्यता प्रदान करने के लिए तुरंत देखभाल की आवश्यकता है।

केन्द्र सरकार पर्यटन को 'उद्योग' घोषित कर चुकी है और वह राज्य सरकारों को भी होटल व्यवसाय को उद्योग मानकर बिजली व पानी की दरों में कटौती, गृहकर में रियायत, होटल परिसर को शहरी भूमि अधिकतम सीमा अधिनियम से छूट आदि जैसे लाभ दिये जाने के लिए प्रेरित कर रही है। इन सब रियायतों से राजस्व में होने वाली क्षति पर्यटन के विकास से होने वाले लाभ से बहुत कम होगी।

भौगोलिक स्थिति

राजस्थान राज्य के तीन प्रमुख धरातलीय विभाजनों में पूर्वी राजस्थान में राजस्थान बांगर प्रदेश उनमें से एक है, और शेखावाटी प्रदेश जिसमें से एक प्रमुख उप–विभाग है। जिसे बांगर प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

यह अध्ययन क्षेत्र $26^0$26′ उत्तरी अक्षांश और $74^0$44′ से $76^0$34′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस प्रदेश में पूर्ण रूप से या विभागीय रूप से तीन जिले आते है। चूरू, झुन्झुनूं और सीकर। चूरू जिले की (6) छः तहसीलों में से केवल तीन तहसीलें शेखावाटी प्रदेश में आती है (चूरू, तारागढ़ और तारानगर) जबकि झुन्झुनूं जिले में (6) तहसीलें आती है, (बुहाना, चिड़ावा, खेतड़ी, झुन्झुनूं, नवलगढ़ और उदयपुरवाटी) जिसमें बुहाना तहसील का नई तहसील के रूप में अस्तित्व झुन्झुनूं जिले के नक्शे में 2001 में आया है, और सीकर जिले में पूर्ण रूप से (6) छः तहसीले आती है (दांतारामगढ़, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, नीमकाथाना सीकर और श्रीमाधोपुर) इस प्रदेश में 23 पंचायत समितियां है। इस प्रकार इस प्रदेश में कुल मिलाकर 15 तहसीलें है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 15,343 वर्ग किलोमीटर है जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 5.6 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के संदर्भ में शेखावाटी प्रदेश में जिलों का योगदान देखा जाये तो चूरू जिले का योगदान 29 प्रतिशत है, झुन्झुनूं जिले का योगदान 31 प्रतिशत है और सीकर जिले का योगदान 40 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के संदर्भ में इन तहसीलों में चूरू तहसील सबसे बड़ी तहसील है और बुहाना तहसील सबसे छोटी तहसील है। क्षेत्रफल के संदर्भ में जिलों अनुसार सीकर जिला प्रथम स्थान पर आता है। झुन्झुनूं जिला द्वितीय स्थान पर आता है और चूरू जिला तृतीय स्थान पर आता है जिसका योगदान 1683 वर्ग किलोमीटर है।

मिश्रा (1967) :– मिश्रा ने राजस्थान राज्य को सात (7) भौगोलिक प्रदेशों में बांटा जिसमें से अर्द्ध शुष्क प्रदेश एक है। और शेखावाटी प्रदेश इस प्रदेश का उत्तरी भाग है। इसके प्रश्चात् प्रो. आर. एल. सिंह (1971) ने राजस्थान राज्य को चार (4) भौगोलिक प्रदेशों में बांटा जिसमें शेखावाटी प्रदेश राजस्थान बांगर प्रदेश के अन्तर्गत आता है। जो पूर्णरूप से या विभागीय रूप से तीन उप विभागों में बांटा हुआ है, जैसे :–

1. B-1 :– यह चूरू प्रदेश का उत्तरी पूर्वी भाग है जो लगभग चूरू जिले के कुल क्षेत्रफल का 20 प्रतिशत है।
2. B-2 :– यह सीकर और झुन्झुनूं प्रदेश का पश्चिमी भाग है जो दोनों जिलों को मिलाकर 70 प्रतिशत बनता है।
3. C-1 :– यह सांभर–डीडवाना प्रदेश है जिसका इस संदर्भ में 10 प्रतिशत योगदान है।

यहां बहुत ही रूचीकर और चौकाने वाली बात प्रस्तुत है कि लेखक के प्रक्षिण ने जिले, तहसील और क्षेत्र के संदर्भ में शेखावाटी प्रदेश का क्षेत्रीय सीमाकंन किया है जो कि कुछ शोधकर्ताओं ने शेखावाटी प्रदेश के नाम पर चूरू जिले के भाग को जो कि 29 प्रतिशत है शेखावाटी प्रदेश के कुल भाग में सम्मिलित नही किया है।

शेखावाटी प्रदेश का मानचित्र

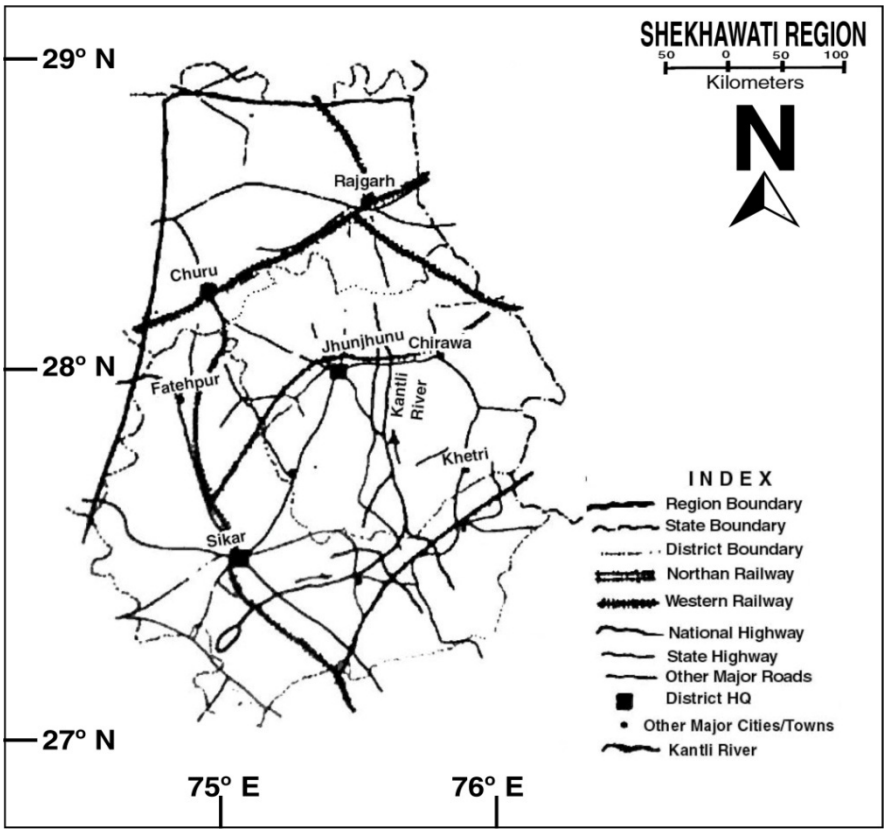

इस प्रदेश की भू–गर्भीय रचना को दो भागों में बांटा गया है जिसमें प्रथम भाग क्षेत्र 85 प्रतिशत है जो बालुका मृदा से ढ़की हुई है। जो लगभग 1 लाख वर्ष पहले की संरचना है जबकि दूसरा भाग का क्षेत्र 15 प्रतिशत है जो दिल्ली तंत्र संरचना के अन्तर्गत आता है जो लगभग 45 लाख वर्षो से पहले की संरचना है जिसकी उन्तपत्ति उच्च केम्ब्रीयन युग की है। अरावली प्रदेश का देहली तंत्र दक्षिण–पश्चिम से उत्तरी–पूर्वी दिशा में है।

राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश में प्रमुख धरातलीय संरचना का वितरण प्रस्तुत करते है तो हम पाते हैं कि इसके अन्तर्गत टीब्बे, मैदानी भाग और पहाड़ी और चट्टानी भाग तथा नदीय यहां तक कि जलीय संरचनाये इस संदर्भ में पायी जाती है। उच्चवच के संदर्भ में यह प्रदेश सभी जगह से समान नही है। दक्षिण से उत्तरी दिशा में इसका उच्चवच घटता है यह प्रदेश तीन प्रकार के विभिन्न उच्चावच क्षेत्रों में बंटा है।

1. उच्च अक्षांश क्षेत्र :– 600 से 900 मीटर के मध्य जो शेखावाटी प्रदेश का दक्षिणी भाग आता है जिसमें दो पर्वतीय सीमाये आती है प्रथम लोहागर्ल सीमा (दक्षिणी–पश्चिमी) में और दूसरी बागोर सीमा (झुन्झुनूं जिले की दक्षिणी–पूर्वी सीमा) में इस भाग में प्रदेश का 10 प्रतिशत भाग आता है।
2. मध्यम अक्षांश क्षेत्र :– 300 से 600 मीटर के मध्य आता है जो प्रदेश का अधिकतम भाग है जिसमें मैदानी भाग (लगभग 60 प्रतिशत) फैला हुआ है।
3. निम्न अक्षांश क्षेत्र :– जो लगभग 151 से 300 मीटर की ऊंचाई के मध्य आता है जिसमें टीब्बों का क्षेत्र फैला हुआ है जो प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है।

शेखावाटी प्रदेश में चार नदियां पायी जाती है जो लोहागर्ल की नदी चन्द्रावती दोहन काटली नदी, ये सभी नदिया उनन्त प्रवाह तंत्र की नदियां है और काटली नदी बेसिन इनमें सबसे लम्बी है जो राज्य के कुल अन्तःप्रवाह तंत्र का 1.4 प्रतिशत क्षेत्र है। प्रमुख रूप से इन नदियों की स्थिति प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है। फिर भी इन सभी प्रवाह तंत्रों में काटली प्रवाह तंत्र प्रमुख है जो 4677.80 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है।

सम्पूर्ण प्रदेश में दो प्रकार की मृदाओं का वितरण पाया जाता है। (सेण्डी मृदा और लाल लोमी मृदा) इन मृदाओं के वितरण में भौतिकीय और रासायनिक प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। थोर्पे और स्मिथ ने मृदा की उत्पत्ति के आधार पर अन्य प्रकार की मृदा के प्रकार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जिसके संदर्भ में प्रक्षिण करते है तो हम पाते है कि चूरू जिले की तीन तहसीलों में जहां टीब्बे पाये जाते है वहां रिमोसल्स प्रकार की मृदा का वितरण पाया जाता है। चूरू जिले की इन तीन तहसीलों में लाल मृदीय मृदा पायी जाती है, जो अत्यधिक लवणीय प्रकृति की है। नदीय और पहाड़ीय मृदा का वितरण आवास के वितरण के अनुसार पाया जाता है।

इस प्रदेश की जलवायु अपेक्षाकृत कम कठोर कम विषम कम शुष्क एवं कम असहनीय है। इस प्रदेश में औसत ग्रीष्मकालीन तापमान 32^0C से 36^0 C पाया जाता है। जबकि शीतकालीन औसत तापमान 10^0 C से 17^0 C पाया जाता है। किन्तु सामान्य स्थिति में कभी–कभी ही तापमान हिमांक बिन्दु से नीचे पहुचता है यहां शीत ऋतु छोटी किन्तु शुष्क होती है। वर्षा का औसत 20 सेमी से 40 सेमी के बीच होता है। अधिकांशतः हवा पश्चिम से प्रवाहित होती है ग्रीष्म ऋतु में कभी–कभी लू भी चला करती है। धूल के बवण्डर भी आते है। हवा के साथ–साथ उसकी तीर्वता के कारण बालु एक स्थान से उड़कर दूसरे स्थानों पर एकत्रित होती रहती है। इसी कारण बालुका स्तूपों का स्थानान्तरण होता रहता है। धूलभरी आधियाँ इस मौसम में आती रहती है। कभी–कभी काली–पीली आँधी भी आती है, जिनकी आवृति मई एवं जून के महीने में अधिक होती है फिर भी यह प्रदेश जलवायु की दृष्टि से रहने योग्य अपेक्षाकृत अधिक है।

शेखावाटी प्रदेश में वनस्पति यहां के धरातल जलवायु मिट्टीयों एवं चट्टानों के प्रकारों के अनुरूप पायी जाती है। जंहा धरातल पहाड़ी चट्टानी कठोर एवं ढालु पाया जाता है वहां उष्ण कटिबन्धीय कांटेदार वृक्ष पाये जाते है। जहां बलुई मैदानी शुष्क बालुका स्तूपमय धरातल पाया जाता है वहां शुष्कता प्रिय पौधे जैसे कैर, बेर, खेजड़ी, बबूल, जाल, पील्लू, खैर आदि के पेड़ पाये जाते है।

सीकर–झुन्झुनूं एवं चूरू जिलों के मैदानी भागों में घास ''सेवण'' पाया जाता है। जिस पर वहां का पशुधन आश्रित है। शेखावाटी प्रदेश में खनिजों की विपुलता एवं विविधता पायी जाती है किन्तु उनकी गुणवता मात्रा तथा आर्थिक स्वरूप के आधार पर जिप्सम, ताँबा, संगमरमर महत्वपूर्ण खनिज माने जाते है। जिप्सम के जमाव चूरू जिले तारानगर के उत्तर–पूर्व में पाया जाता है ताम्बे के भण्डार झुन्झुनूं जिले के खेतड़ी–सिंघाना क्षेत्र में पहाड़ियों से कोलिहान, खेतड़ी, पपुरना, चान्दमारी, बबाई में पाये जाते है।

सीकर जिले में ओण्डा स्थान से भी संगमरमर पत्थर निकाला जाता है। सीकर में पत्थर चीरने की सैकड़ों मशीने उपलब्ध है तथा हजारों व्यक्तियों को इससे रोजगार प्राप्त होता है। बेरोलियन टोरड़ा बूचरा से चूरला (सीकर) से चीनी मृतिका सीकर से विभिन्न प्रकार रंग रूप एवं सौन्दर्य का ग्रेनाईट उपलब्ध कराता है सीकर से डोलमेनाई निकाला जाता है। सीकर से अभ्रक तथा तामड़ा पत्थर महबा–बागेस्टर (सीकर) से निकाला जाता है। इसके अलावा भी कई अन्य खनिज डोलोमाईट, लौहा (डाबला–सिंघाना–नीमकाथाना) क्षेत्र में पाये जाते है।

राजस्थान का जन उद्योगः पर्यटन

पिछले दो दशकों से राजस्थान पूरे देश में एक अग्रणीय पर्यटक राज्य के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। भारत में आने वाला प्रत्येक तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान की यात्रा पर अवश्य आता है। राजस्थान में प्रतिवर्ष लगभग 72लाख पर्यटक आते हैं। इनमें लगभग 5.5लाख विदेशी पर्यटक भी शामिल हैं।

राजस्थान के संदर्भ में

पिछले एक दशक में राजस्थान अति लोकप्रिय पर्यटक राज्य के नाम से उभरा है। सन् 1973 में जहां राज्य में कुल 20 लाख देशी–विदेशी पर्यटक आये थे, वहीं यह संख्या वर्ष 1998–99 में बढ़कर लगभग 72लाख तक पहुंच चुकी है। भारत में आने वाले प्रतिवर्ष कुल 23 लाख विदेशी पर्यटकों में से

लगभग 6 लाख पर्यटक राजस्थान आते हैं। इसके अतिरिक्त 50 लाख देशी पर्यटक भी प्रतिवर्ष राज्य में आते हैं। विश्व प्रसिद्ध 'सुनहरा त्रिकोण' जो कि दिल्ली–आगरा–जयपुर के लिए विख्यात है, के कारण जयपुर का विश्व पर्यटन मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान है। भारत आने वाले 60 प्रतिशत विदेशी पर्यटक 'सुनहरा त्रिकोण' में आवश्यक रूप से भ्रमण करते हैं।

राजस्थान अपनी समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर तथा रंगीन मेले, त्यौंहारों व मिलनसार लोगों के कारण विश्व के संपूर्ण पर्यटकों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर चुका है। केवल समुद्र तट और हिमाच्छादित पर्वतों को छोड़कर वस्तुतः राजस्थान में वह सब आकर्षण उपलब्ध है जिनसे पर्यटक आकर्षित होते हैं।

विगत कुछ वर्षों में राज्य में पर्यटन व्यवसाय का तीव्र गति से विकास हुआ है। देशी पर्यटकों की वार्षिक वृद्धि दर 7 प्रतिशत एवं विदेशी पर्यटकों की 5 प्रतिशत है। राज्य के कुछ पर्यटक उत्पाद जैसे कि पैलेस ऑन व्हील्स (शाही रेलगाड़ी), हेरीटेज होटल, कैमल सफारी, पुष्कर मेला, मरू उत्सव, वन्य जीवन, अभयारण्य आदि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर चुके हैं।

शेखावाटी के संदर्भ में

राजस्थान में सीकर और झुंझुनूं के मिले–जुले इलाकों को शेखावाटी नाम से जाना जाता है। शेखावाटी के संस्थापक माने जाने वाले राव शेखा जयपुर के कछवाहा वंश के ही थे। एक तो यहां के भवन, दूसरे यहां के भित्ति चित्र। पूरे क्षेत्र में तकरीबन 100 ऐसे स्थान है, जो पर्यटकों को अपनी ओर खींचने की क्षमता रखते हैं लेकिन पर्यटन मानचित्र पर कुछ गिने–चुने स्थल ही अंकित हैं, जहां पर्यटक बार–बार आते है। यह तथ्य आश्चर्यजनक ही है कि 19वीं सदी में यह समूचा प्रदेश वीराना माना जाता रहा, लेकिन बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक यहां के बाशिन्दों ने ही बेहद सुंदर इमारतों का निर्माण कराया एवं उन पर रंग–बिरंगे चित्रों का अलंकरण किया।

पर्यटन का आर्थिक महत्व

पर्यटन न केवल आमोद–प्रमोद, मनोरंजन, भ्रमण एवं उद्देश्य की पूर्ति होती है, वरन् यह विदेशी मुद्रा अर्जन का साधन, सहयोग एवं सद्भाव का आधार, रोजगार प्रदान करने वाला उद्योग एवं शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक आदान–प्रदान का भी आधार है। अतः पर्यटन से आपसी सद्भाव, मानसिक स्तर में वृद्धि तथा आर्थिक विकास होता है।

शेखावाटी प्रदेश की पर्यटन का महत्व अर्थव्यवस्था को सुधारने, सुदृढ़ करने एवं सतत् रखने में अत्यधिक सहयोगी पाया जाता है। इससे न केवल गाइड एवं अधिकारी के रूप में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है वरन् यातायात, होटल, रेस्तरां, सेवा आदि के रूप में उपभोक्ता बनकर उनका उपभोग करता है तथा बदले में राशि खर्च कर उस सेवा का पुनर्भरण करता है। पर्यटन निम्न प्रकार से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में मदद करता हैः–

विदेशी मुद्रा की प्राप्तिः– प्रत्येक विदेशी पर्यटक अपने भ्रमण के स्थानों पर विदेशी मुद्रा को खर्च करता है। भारत में आने वाले प्रत्येक तीसरे पर्यटक में से एक (अर्थात 33प्रतिशत) राजस्थान आता है। शेखावाटी प्रदेश में वर्तमान में लगभग 25039 विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। एक विदेशी पर्यटक प्रतिदिन भोजन, आवास आदि सुविधाओं पर लगभग 1000 रूपये व्यय करता है। देशी पर्यटक मात्र 300–400रूपये खर्च करता है। परिणामतः इस आय से राज्य के आर्थिक विकास में सहयोग मिलता है। यदि इस उद्योग को और अधिक बढ़ाया जाये तो अधिक आर्थिक सहयोग मिल सकेगा एवं राज्य के आर्थिक विकास में सहयोग मिलेगा।

पर्यटन से रोजगार के साधन बढ़ते हैं। पर्यटक हमारी सेवायें लेता है बदले में विदेशी मुद्रा प्रदान करता है, खर्च करता है। उससे हमारे आधारभूत ढांचे की सड़क, परिवहन, संचार, विद्युत, पेयजल, उद्योग आदि का विकास होता है। अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन होता है। पर्यटकों से मिलने वाले आदेशों से निर्यात संवर्द्धन होता है। सांस्कृतिक, सार्वजनिक पार्क, वन्य जीव अभयारण्य, झीलें, बाग–बगीचों आदि स्थानों का रख–रखाव होता है।

शेखावाटी प्रदेश में रोजगार

राजस्थान में पर्यटन उद्योग को अथक प्रयासों के बाद 'उद्योग' का दर्जा दे दिया गया है। इसमें किये गये विनियोग का कई गुणा लाभ होता है। इससे होटल मालिक, गाइड, ड्राइवर, ट्रेवल एजेन्ट, कर्मचारियों, धोबी, नाई, रसोइया, रेस्तरां के कर्मचारियों, स्थानीय एवं प्रादेशिक यातायात से संबंधित लोगों, कला–संस्कृति से जुड़े व्यापारियों, दस्तकारियों, हथकरघा उद्योग के कर्मचारियों आदि को

रोजगार उपलब्ध होता है तथा साथ ही उनकी आर्थिक स्थिति भी मजबूत होती है। पर्यटन से जुड़े कई परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। भारत में जम्मू और कश्मीर राज्य की अर्थव्यवस्था, गोवा की अर्थव्यवस्था, विदेशों में इटली, स्पेन, सिंगापुर, हांगकांग, स्विट्जरलैंड की अर्थव्यवस्था पूर्णतः पर्यटन उद्योग पर आधारित है। अतः पर्यटन उद्योग से विविध एवं विभिन्न प्रकार के रोजगार के साधन उपलब्ध होते हैं। पर्यटन उद्योग प्रदूषण रहित, कम निवेश वाला एवं अधिक लाभ देने वाला एक ही उद्योग है। एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रति आठ विदेशी पर्यटकों पर एक व्यक्ति को रोजगार मिलता है। प्रति 32 स्वदेशी पर्यटकों पर एक व्यक्ति को रोजगार मिलता है। अतः राजस्थान में पर्यटकों की बढ़ती संख्या पर अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त होने की संभावना है।

पर्यटन स्थल पर पर्यटक स्थानीय लोगों के तांगे, रिक्शे, कारें, जीप, मोटरसाइकिल, साइकिल, घोड़े, ऊंट, हाथी आदि का प्रयोग करते हैं। इससे भी स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलते हैं। मरूमेले जैसलमेर में हजारों की संख्या में ऊंट मालिक 'सम' मरूस्थल में ऊंट सवारी करवाते हैं। आमेर महलों पर सैंकड़ों हाथी मालिक 'हाथी सवारी' करवाते हैं तथा अच्छी राशि कमाते हैं। अतः पर्यटक न केवल प्रत्यक्ष रोजगार को बढ़ावा देते हैं, वरन् परोक्ष रूप से भी रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र में भित्तिचित्र, सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर – पर्यटन से पर्यटक के मानसिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक अवयवों का विकास होता है। भावात्मक एवं सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंध मजबूत होते हैं। इससे राजनैतिक एवं सामाजिक विद्वेष कम किया जा सकता है। पर्यटन हमारे सांस्कृतिक वैभव, कलात्मक धरोहर तथा नैसर्गिक दृश्यों के रख–रखाव का भी साधन है। राज्य के महलों, दुर्गों, किलों, हवेलियों, शेखावाटी क्षेत्र की फतेहपुर, पिलानी, बगड़, झुंझुनूं (महणसर की हवेली), लक्ष्मणगढ़, सीकर, बिसाउ, रामगढ़ आदि की हवेलियां, नवलगढ़ की मोरों की हवेलियां, पोद्दार, सेकसरिया, भगत, मानसिंघका, छावछरिया आदि की हवेलियां, मंडावा की हवेलियां आदि में चित्रकारी, मीनाकारी, स्वर्णकला आदि देखते ही बनती है। इसके झरोखे, वास्तुकला, स्थापत्यकला, भवननिर्माण कला, चित्रकला आदि बेजोड़ हैं। फिर भी इनका उपेक्षित रहना इनकी नियती बन गई है। इसलिए पर्यटन से इनके जुड़ाव से इनकी सार–संभाल एवं मरम्मत हेतु राशि प्राप्त होती रहती है तथा मरम्मत होती रहती है। आज डूंडलोद, मुकुंदगढ़, नवलगढ़, झुंझुनूं, मंडावा, महसर आदि कई महलों एवं किलों को 'हेरिटेज होटल' में बदलकर बड़ी–बड़ी कंपनियों के द्वारा पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा इन सांस्कृतिक धरोहर के अंगों की सार–संभाल, मरम्मत आदि का काम भी हो रहा है।

विभिन्न वाद्य यंत्र, वाद्य वादक, लोक कलायें–कठपुतलीकला, लोकगीत, लोकनृत्य, कालबेलिया नृत्य (गुलाबो का) आदि के कारण देशी, विदेशी पर्यटक हमारी धरती धोरां री, "Land of heros of their epics and the Rajputs of Indian History" की वीर भोग्या वसुंधरा, शौर्यता, बलिदान और सदाशयता की भूमि राजस्थान की ओर आकर्षित होते हैं। ऐसे सांस्कृतिक परिवेश का पूर्ण योगदान है। वर्तमान में पर्यटन को अधिक आकर्षित करने के लिए ऊंट सवारी, मलानी घोड़ा घुड़सवारी आदि के अवसर पर्यटकों को प्रदान किये जाते हैं।

फार्म ट्यूरिज्म

शेखावाटी (सीकर, झुंझुनूं एवं चूरू) पारम्परिक रूप में हमेशा से एक मरू प्रदेश के रूप में ही जाना जाता रहा है। पूर्णतया वर्षा पर आधारित खेती करने वाले इस क्षेत्र के लोगों का रहन–सहन का स्तर साधारण और जीवनयापन के साधन सीमित रहे। लेकिन 25 वर्षों में शेखावाटी के इतिहास ने एक महत्वपूर्ण करवट ली और शेखावाटी के मेहनतकश उद्यमी किसानों ने रेगिस्तान को हरे–भरे लहलहाते खेतों वाले प्रदेश में बदल दिया है। कठोर एवं रेगिस्तान की विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए यहां के किसानों और कृषि विभाग के सुव्यवस्थित एवं निरंतर प्रयासों से यहां कृषि उत्पादन का 80प्रतिशत से अधिक भाग अन्य स्थानों पर भेजा जा रहा है, जो कि मात्र 25 वर्ष पहले करीब–करीब सभी कृषि उत्पाद इस क्षेत्र में बाहर से आते थे। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए शेखावाटी की पहचान स्थापित करने के लिए कृषि निदेशक, श्री पुरूषोत्तम अग्रवाल द्वारा फार्म ट्यूरिज्म के रूप में एक अभिनव पहल का सुझाव दिया गया। फार्म ट्यूरिज्म का प्रमुख लक्ष्य पर्यटकों को सफारी (ऊंट, घोड़े, ऊंटगाड़ी, जीप इत्यादि) द्वारा रोमांच से भरपूर यात्रा का आनन्द एवं सफारी के दौरान खेतों पर किसानों के घरों में उनके रहन–सहन, संस्कृति, खान–पान इत्यादि के अनुभव के साथ–साथ कृषि क्षेत्र में किसानों की उपलब्धियों की जानकारी देना है। इस वर्ष शेखावाटी उत्सव समिति द्वारा इस दिशा में पहला प्रयास शेखावाटी के नवलगढ़ एवं मुकुंदगढ़ से प्रारंभ कर रही है।

मोरारका फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा सफारी एवं फार्म ट्यूरिज्म के लिए सभी आवश्यक तैयारियां कर एक प्रयोग के रूप में पर्यटकों के लिए प्रस्तुत की गई है। इच्छुक किसानों एवं ऊंट पालकों को प्रारंभ में पर्यटकों के अल्प विश्राम हेतु साफ–सुथरा स्थान, बैठने के लिए चारपाइयां एवं अपनी दैनिक जीवन के खान–पान की व्यवस्था करनी होगी।

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटकों का आगमन

राजस्थान अपनी स्थापना के पूर्व से ही गौरव गाथाओं, अजेय दुर्गों, भक्त महलों, ऐतिहासिक स्मारकों, आकर्षण एवं मनोहारी स्थापत्यकाल, हस्तकला एवं लोक कल्याण के लिये न केवल प्रसिद्ध ही रहा है बल्कि पर्यटकों के लिये उत्सुकता उत्पन्न करता रहा है। यही कारण है कि राजस्थान पर्यटन क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय है। इन्हीं आकर्षणों के कारण राज्य और प्रदेश में आने वाले पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। शेखावाटी प्रदेश में 59536 पर्यटक स्वदेशी एवं 25039 विदेशी पर्यटकों ने प्रदेश के विभिन्न पर्यटक स्थलों का भ्रमण किया।

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटकों की संख्या में सबसे अधिक भाग फ्रांस का तथा बाद में ब्रिटिश, अमरीका, जापान, जर्मनी व अन्य यूरोप के देशों का स्थान है। अमेरिकन संख्या में तो कम आते परन्तु ये महलों में (पैलेस होटल) ठहरते हैं। इसका कारण उच्च सुविधाओं की प्राप्ति है। इसके विपरीत फ्रांस के पर्यटक पैलेस होटल में ठहरने की अपेक्षा वे आम जनता के साथ मिलकर रहना तथा उनके रहन सहन व जीवन का अनुभव करना चाहते हैं। ये लोग हर तरह के सामाजिक वातावरण में रहना चाहते हैं। ये लोग हर तरह के सामाजिक वातावरण में रहना चाहते हैं। जर्मन लोगों की विशेषता इन दोनों से भिन्न प्रकार की है। वे कला के शौकीन होते हैं परन्तु ये अमेरिकन जैसी विलासताओं एवं सुविधाओं से दूर रहना चाहते हैं।

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटक मुख्य रूप से वर्षा ऋतु (जुलाई–अगस्त) को छोड़कर वर्ष के सभी महीनों में आते रहते हैं, फ्रांस के पर्यटक अधिकतर स्कूल एवं कॉलेजों की छुट्टियों में आते हैं, लेकिन इनका अधिकतर आगमन अक्टूबर से मार्च के महीने में होता है।

शेखावाटी प्रदेश में सबसे पहले पर्यटक मंडावा पहुंचते हैं। वायुयान से सैर करने वाले पर्यटक सीधे जयपुर चले जाते हैं। प्रदेश में अधिक आवास व्यवस्था के दिन बढ़ाने के लिए कोई भी सफल प्रयास अब तक नहीं किये गये हैं। दूसरे देशों की तुलना में यह समय भी कहीं ज्यादा है। इसके कारण यहां की स्थिति व अन्य पारिस्थितिकी वातावरण सभी केंद्रों पर कुछ अलग विशेषताएं रखता है।

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटक का त्रिकोणीय प्रारूप

प्रदेश के सीकर, झुंझुनूं एवं चूरू केंद्रों का भ्रमण एक त्रिकोणात्मक प्रारूप बनाते हैं। 1978 में राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड की स्थापना एक निजी दायित्व वाली कंपनी के रूप में हुई थी। इसी निगम के तहत राज्य सरकार ने सीकर एवं झुंझुनूं जिला मुख्यालय पर पर्यटन विभाग की स्थापना की। जिसके निम्न कार्य हैः–

1. पर्यटन महत्व के स्थानों का रख–रखाव व विकास करना।
2. पर्यटन की प्रचार सामग्री उपलब्ध करना, वितरित करना तथा बेचना।
3. परिवहन, मनोरंजन, माल की खरीद आदि के लिए सुविधाएं प्रदान करना व पैकेज–पर्यटन की व्यवस्था करना।
4. पर्यटकों के लिए निवास व भोजन की व्यवस्था के लिए होटल, युवा–होस्टल, टूरिस्ट बंगले आदि बनाना व चलाना।
5. प्रदेश में पर्यटन विकास के लिए प्रोजेक्ट व स्कीम बनाना व लागू करना।
6. शेखावाटी प्रदेश में 24 कोसी परिक्रमा का विकास कार्य प्रारंभ किया।

पर्यटन विकास के अन्य उपाय

1. पर्यटन विभाग विभिन्न पर्यटन स्थलों व अन्य जीवों, ऐतिहासिक महत्व, हस्तकला आदि के बारे में रंगीन एवं आकर्षक साहित्य उपलब्ध करवाता है।
2. पर्यटकों के मन में विभिन्न पर्यटन स्थलों को देखने की रूचि उत्पन्न करने के लिए पर्यटन विभाग रंगीन फिल्में होटलों और विश्राम स्थलों पर दिखाता है।

3. पर्यटन विभाग समय–समय पर प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर प्रचार–प्रसार हेतु प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारकों, वन्य जीवों के अभयारण्य, शेखावाटी के रीति–रिवाजों, वेश–भूषा, लोकनृत्यों, लोकगीतों और वाद्यो की प्रदर्शनियां आयोजित करता है।
4. विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन विभाग मेलों और त्यौंहारों पर उन पर्यटन स्थलों पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं विदेशी पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों के बीच प्रतियोगिताएं, ऊंट दौड़, घुड़दौड़ आदि का आयोजन करवाता है।
5. राजस्थान सरकार ने प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्व को स्वीकार करते हुए पर्यटन स्थलों को सड़क तथा आधारभूत सुविधाओं से जोड़ने का प्रयास किया है एवं सभी स्थानों पर यह सुविधाएं उपलब्ध हो चुकी है।
6. राज्य की औद्योगिक नीति में 1990 में पर्यटन को एक उद्योग का दर्जा दे दिया गया है जिससे कि उद्योग को मिलने वाली सभी सुविधाएं पर्यटन को भी मिल सकें।
7. सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए दुर्ग, मंदिर एवं धार्मिक स्थानों के विकास का कार्य प्रारंभ किया गया।
8. राज्य एवं प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण स्थान है।
9. शेखावाटी प्रदेश के नवलगढ़ कस्बे में 17 फरवरी 1996 में शेखावाटी महोत्सव का शुभारंभ किया।
10. प्रदेश में होटलो को एक, दो एवं तीन सितारों में वर्गीकृत करने का कार्य पर्यटक विभाग द्वारा संपन्न किया जाता है।
11. प्रदेश में पर्यटन के विकास में आवास की समस्या है। इस कमी को पूरा करने के लिए प्रदेश में पेईंग–गेस्ट (Paying Guest) योजना लागू की है।

शेखावाटी प्रदेश में पर्यटन उद्योग की समस्याएं एवं समाधान के लिए सुझाव

प्रदेश का पर्यटन उद्योग अभी भी शैशव अवस्था में है। अतः उद्योग को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उद्योग की प्रमुख समस्याएं एवं उनके हल नीचे दिये गये हैं:–

1. अपर्याप्त पर्यटन प्रचार–प्रसार साहित्य प्रदेश में पर्यटक स्थलों के बारे में जानकारी देने वाले साहित्य पर्यटन स्थलों के बारे में उत्सुकता पैदा करता है। अतः सुझाव दिया जाता है कि पर्यटन स्थलों के बारे में पूरी–पूरी सूचनाएं, ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन तथा इन स्थलों के बारे में जानकारी देने के लिए पर्याप्त मात्रा में साहित्य उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
2. पर्यटन स्थलों पर गाइड एवं जनसंपर्क समस्या :- प्रदेश के अभी कई पर्यटन स्थल ऐसे हैं जहां पर प्रशिक्षित गाइड अभी भी उपलब्ध नहीं और न ही कोई जन–संपर्क कार्यालय। इसकी अनुपस्थिति में न तो दर्शनीय स्थानों के बारे में संपूर्ण जानकारी और न ही विश्वसनीय जानकारी मिल पाती है। अतः सुझाव दिया जाता है कि जनसंपर्क कार्यालय खोले जाएं तथा प्रशिक्षित गाइड उपलब्ध कराये जायें। राज्य सरकार इस संदर्भ में कुछ करने को प्रयत्नशील है और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पर्यटन विकास पाठ्यक्रम को अपनाया गया है।
3. पर्यटन स्थलों की रख–रखाव की समस्या :- पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटक स्थलों का रख–रखाव जरूरी है। इसके साथ–साथ सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए पर्यटक स्थलों की देख–रेख आवश्यक है। आज भी कई स्थल ऐसे हैं जहां पर सफाई, रोशनी, मरम्मत आदि की व्यवस्था नहीं है या अपर्याप्त व्यवस्था है। इसी अनुपस्थिति में उन स्थानों का विकास ही नहीं हो पाता है। इस समस्या का समाधान स्थानीय संस्थाओं पर जिम्मेदारी डालने से हो सकता है।
4. नये पर्यटन स्थलों का विकास :- प्रदेश में पर्यटन स्थलों की वस्तुतः कमी है, इन्हें तो विकसित करना है जिससे कि पर्यटक इन स्थानों पर आकर्षित होकर चले आयें। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विभाग इन स्थलों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करे। कुछ ऐसे स्थल भी हैं जो पर्यटक स्थल के रूप में चिन्हित तो हैं परन्तु वहां सैलानियों की आवक कम है, अतः ऐसे प्रयास करने होंगे कि उन स्थानों पर यात्रियों की संख्या बढ़ सके। इस संबंध में यह सुझाव दिया जाता है कि नये

पर्यटन स्थलों के विकास के लिए पुरातत्व विभाग को तथा इस क्षेत्र में शोध कार्य कर रहे लोगों की सहायता ली जा सके।

5. आवास सुविधाओं का अभाव :- पर्यटन स्थलों पर आरामदायक, सुरक्षित एवं उपयुक्त आवास व्यवस्थाओं की कमी है। आवास सुविधाएं मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही है। निजी क्षेत्र भी अब इसमें प्रवेश कर रहा है लेकिन इसके बावजूद भी समस्या बनी हुई है। राज्य सरकार ने 1991 में पेईंग गेस्ट योजना चालू की है। आशा है इससे आवास सुविधाएं तथा भोजन की समस्या का कुछ हल संभव होगा।
6. अपर्याप्त परिवहन व संचार सुविधाएं :- यद्यपि सभी बड़े नगर एवं कस्बे पर्यटन स्थल परिवहन साधनों से जुड़े हैं फिर भी वायु सेवा से अभी नहीं जुड़ पाये हैं। अतः इनसे जोड़ने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके साथ ही मुख्य समस्या है आंतरिक पर्यटन स्थलों की अतः इन स्थानों पर परिवहन एवं संचार सुविधा बढ़ाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Anand, M.M. 1976. Tourism and Hotel Industry in India. xvi+260pp. New Delhi (Patience-Hall of India)

Anand, M.M. Tourism and Hotel Industry in India, prentice Hall of India, 1977.

Batra K.L. 1990. Problems and Prospects of Tourism. ix+142pp. Jaipur (Printwell Publishers)

Boniface, Priscilla. 1995. Managing Quality Cultural Tourism xi+124 pp. London (Routledge).

Chouhan, T.S. (1993) Rajasthan Atlas, (In Hindi), Vigyan Prakashan, Jodhpur.

Chouhan, T.S. (1994) Geography of Rajasthan, Vol. 1 and 2, Vigyan Prakashan, Jodhpur.

Gee, C., Choy, Y., Dexter, J.L. and Makens, J.C. 1984. The Travel Industry. xv+275 pp. Connecticut. (The AVI Publishing Co.)

Mathur, N. and Dodson, R. 1993. Tourism and Socio-Economic System. 221pp. Int. J. Manag. Tour.

Mathur, N. and Dodson, R. 1993. Tourism and Socio-Economic System. 221pp. Int. J. Manag. Tour.

Sharma, M.K.. 2007. Medical Plant Geography, Rachana Publication, Jaipur

Singh, R.B., Tourism Development Environment Monitoring and Remote Sensing, Studies in Environment and Development; Common Health Publishers, New Delhi.

Vishwanathan, Prema. 1996. Economic Contribution of Tourism Section, New Delhi, Indian Express, Jan.1996.